माँ-बाप के हुकूक

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

1] एक आदमी ने रसूलुल्लाहﷺ से पूछा ए अल्लाह के रसूलﷺ मेरे अच्छे व्यवहार का ज्यादा हकदार कौन है? रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया तेरी माँ, उसने कहा फिर कौन? आपने फरमाया तेरी माँ, उसने कहा फिर कौन? आपने फरमाया तेरी माँ, उसने कहा फिर कौन? आपने फरमाया तेरा बाप, फिर दर्ज़ा-बादर्ज़ा जो तेरे करीबी लोग हो. इस्से मालूम हुआ की माँ का दर्ज़ा बाप से बढा हुआ है, यही बात कुरान से भी मालूम होती है, सूरह लुकमान में अल्लाह ने फरमाया की 'हमने इन्सान को माँ-बाप की शुकर गुजारी का हुक्म दिया' और उस्के तुरन्त बाद ये फरमाया की 'उस्की माँ ने उस्को तकलीफ पर तकलीफ झेल कर 9 महीने तक अपने पेट में उठाये रखा फिर दो साल तक अपने खून से उसे पाला' इस वजह से उलमा ने लिखा है की जहा तक आदर

और सम्मान का सवाल है बाप ज्यादा हकदार है और सेवा के लिहाज़ से माँ का दर्ज़ा बढा हुआ है.

_बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

2] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया वो जलील हो ये बात आपﷺ ने तीन बार फरमाई, लोगों ने पूछा की ए अल्लाह के रसूल कौन जलील हो? और ये शब्द किन लोगों के हुकूक में आपﷺ ने फरमाया की वो शख्स जिसने अपने माँ-बाप को बुढापे की हालत में पाया, उन दोनो मेसे एक को या दोनो को फिर उन्की सेवा करके जन्नत में दाखिल ना हुआ.

_मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

3] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की अल्लाह ने तुम पर माँ-बाप के साथ बुरा सुलूक करने को हराम किया है और लडकियो को जिन्दा दफन करना, और लालच और कन्जुसी, और तुम्हारे लिये उसने नापसन्द किया है बेकार किस्म की

बातचीत, और ज्यादा सवाल करना, और माल को बरबाद करना. सवाल ज्यादा करने से मुराद किसी चिझ के बारे में बिला वजह कुरेद करना है, इस्का मतलब ये नही है की आदमी जो बात नही जानता उस्के बारे में भी ना पूछे, बल्की इस्का मतलब ये है की उस तरह की कुरेद ना करे जिस तरह की कुरेद बनी इसराइल ने गाय जिब्ह करने के मामला में की थी, और आज भी इस तरह की कुरेद वो लोग करते है जो दीन पर अमल करना नही चाहते.

_बुखारी की रिवायत का खुलासा.

4] अबू उसैद (रदी) फरमाते है की हम लोग रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में बैठे हुए थे, बनू सलमा का एक आदमी आपﷺ के पास आया, उसने कहा की ए अल्लाह के रसूल! माँ-बाप की मौत के बाद उन्का कोई हुकूक बाकी रहता है जिसमे अदा करू? आपने फरमाया हा उन्के लिये दुआ और इस्तिगफार करो और जो जाईज वसिय्यत कर गये है उसे पूरा करो और माँ-बाप से जिन लोगों का रिश्तेदारी का

संबंध है उन्के साथ सिलारहमी करो और माँ-बाप के दोस्त और सहेलियों की इज्ज़त और खातिरदारी, आवभगत करो.

_अबू दाउद की रिवायत का खुलासा.

5] अबु तुफैल फरमाते है की मेने रसूलुल्लाहﷺ को मकामे जिइर्राना में देखा की आप गोश्त बाट रहे थे की इतने में एक औरत आई और आपﷺ के करीब गई तो आपने अपनी चादर बिछादी जिस पर वो बैठ गई तो मेने पूछा ये कौन है? लोगों ने मुझे बताया की ये आपﷺ की माँ है जिन्होने आप को दूध पिलाया है.

_अबू दाउद की रिवायत का खुलासा.

6] हजरत अबू बक्कर (रदी) की बेटी हजरत असमा (रदी) फरमाती है की उस ज़माने में जबकी कुरैश और मुसलमानो के बीच सुलह हुई थी (सलहे हुदैबिया) मेरी माँ (रजाई माँ) मेरे पास आई और वो अभी इस्लाम नही लाई थी बल्की शिर्क की हालत पर थी तो मेने आपﷺ से पूछा की मेरी माँ

मेरे पास आई है और वो चाहती है की में उसे कुछ दू तो क्या में उसे दे सकती हु? आपﷺ ने फरमाया हा तुम उस्के साथ मेहरबानी का सुलूक करो.

_बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा.